9

बच्चों की व्यवहार संबंधी समस्याएँ और प्रबंधन

कृष्ण चंद्र चौधरी*

बाल विकास, मनोविज्ञान की एक शाखा के रूप में विकसित हुआ है। इसके अंतर्गत बच्चों के व्यवहार, स्थितियाँ, समस्याओं तथा उन सभी कारणों का अध्ययन किया जाता है जिनका प्रभाव बच्चे के व्यवहार पर पड़ता है। अतः बाल विकास के अंतर्गत बच्चों के व्यवहार और उन व्यवहारों में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को समझने का प्रयत्न किया जाता है। प्रस्तुत लेख में व्यवसाय संबंधी समस्याओं को प्रस्तुत कर उनके प्रबंधन के उपायों की चर्चा की गई है। बच्चे के परिवार व विद्यालय दोनों ही परिवेश में उनके प्रबंधन के भिन्न-भिन्न उपाए किये जा सकते हैं। जिनके माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास आदि को बढ़ाया जा सकता है।

वर्तमान युग में अनेक मनोसामाजिक, व्यावहारिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक कारक मानव तथा उसके परिवेश को प्रभावित कर रहे हैं।

इस क्रम में बच्चों का परिवार व समाज के साथ तालमेल या सामंजस्य होना आवश्यक होता है, लेकिन जो बच्चे समाज व परिवार की इच्छाओं और अपेक्षाओं के अनुसार व्यवहार नहीं करते, उनका व्यवहार सामान्यतः समस्या के रूप में सामने आता है। यह समस्यात्मक व्यवहार बच्चों की प्रतिभा के विकास में बाधक होता है इसलिए आवश्यक हो जाता है कि समस्यात्मक व्यवहार का प्रबंधन किया जाए एवं बच्चे की प्रतिभा का समुचित विकास किया जाए।

व्यवहार (आदत या लत) संबंधी प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं जो सामान्य रूप से सामने आती हैं—

1. अँगूठा चूसना

अँगूठा चूसना शिशु के लिए सामान्य घटना है। अँगूठा चूसने से बच्चे को संतोष और आराम मिलता है। जब बच्चा भूखा होता है, अकेला व बेचैन होता है तो अपना अँगूठा चूस कर उसे सुख-संतोष की प्राप्ति होती है। एक साल से छोटी आयु के शिशु के लिए कुछ देर के लिए अँगूठा चूस लेने पर किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होनी चाहिए इसे सामान्य बात समझ कर स्वीकार करें। यदि पाँच वर्ष की आयु होने पर भी बच्चा अकारण अँगूठा चूसता है तो इस विषय में शिशु रोग विशेषज्ञ की सलाह लें। इसके पश्चात् बच्चे को किसी मनोवैज्ञानिक को दिखाएँ। अँगूठे पर मिर्च लगाना, कुनैन लगाना, पट्टी बाँधना या लकड़ी बाँधना समस्या का हल नहीं है। ऐसा करने से बच्चे में अपराध बोध बढ़ेगा और वह आपके पीछे मौका

* *सहायक प्रोफ़ेसर*, मनोविज्ञान विभाग, एस. बी. कॉलेज (वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय), मौलाबाग, आरा, जिला-भोजपुर (बिहार)–802301

मिलते ही अँगूठा चूसेगा। इस प्रकार के प्रतिबंधों से कभी-कभी अँगूठा चूसने वाले बच्चों की आदत छुड़ाई जा सकती है, जो वैसे भी कुछ समय के अंतराल में स्वयं ही अँगूठा चूसना छोड़ देते हैं। हाँ, बहुत ज़्यादा अँगूठा चूसने से बच्चे के दाँतों को हानि पहुँचती है। बच्चे के ऊपर वाले दाँत बाहर की ओर निकल आते हैं तथा नीचे के दाँत या तो अंदर धँस जाते हैं, या फिर पीछे हो जाते हैं। अँगूठा चूसने की आदत मुख्यतः पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में होती है। अतः यह दूध वाले दाँतों को हानि पहुँचाती है। स्थायी दाँतों को नहीं। अतः अधिक चिंता की आवश्यकता नहीं है। हाँ, यदि यह आदत पाँच वर्ष के बाद भी बनी रहती है तो बच्चे के स्थायी दाँतों को भी हानि पहुँच सकती है। गलत तरीके से निकले दाँतों का इलाज कराना काफ़ी महँगा पड़ सकता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाये तो अँगूठा चूसना एक सामान्य-सा व्यवहार है, लेकिन यही व्यवहार एक आयु के बाद और लगातार बने रहना समस्या बन जाता है। इसके पीछे कई कारण है; जैसे — माँ का दूध न मिलना, माँ का दूध कम मिलना, माँ का दूध जल्दी छुड़ा देना या छोड़ देना, बच्चे में असुरक्षा की भावना, डर-भय होना आदि। कई बच्चे 10 से 12 वर्ष के हो जाने पर भी मौका मिलते ही अँगूठा चूसते हैं।

प्रबंधन

इस समस्या का प्रबंधन करने के लिए वास्तविक कारणों को समझना ज़रूरी है, जो आमतौर पर ऊपर लिखे कारणों से होते हैं। इस आदत को जबर्दस्ती नहीं छुड़ाना चाहिए, बच्चे को समझाकर ही इस आदत (लत) से उसे मुक्त कराया जा सकता है। बच्चे का अँगूठा धैर्य के साथ रात में सोते समय मुँह से निकाल देना चाहिए और दिन में उसे अँगूठा चूसने के लिए हतोत्साहित करना चाहिए। मनोवैज्ञानिक रूप से असुरक्षा और भय को समाप्त करने की कोशिश निरंतर करनी चाहिए। इन कारणों के न रहने पर बच्चा अँगूठा चूसना बंद कर देगा।

2. दाँतों से नाखून काटना

दाँतों से नाखून काटने की समस्या अकसर बच्चों में पाई जाती है। कई बार यह देखने में आता है कि जब बच्चे के नाखून नहीं काटे गए हैं और शाला पूर्व शिक्षा या विद्यालय में व्यक्तिगत स्वच्छता के लिए बच्चों की जाँच की जाती है उस समय टोके जाने से बचने के लिए बच्चा नाखूनों को दाँतों से काट लेता है, लेकिन नाखून बढ़े हुए और गंदे नहीं होने पर भी अगर बच्चा अपने हाथों के नाखूनों को काटता है तो उसके पीछे मनोवैज्ञानिक कारण होता है। बच्चा स्वभाव से घबराया या असुरक्षा की भावना होने पर नाखून दाँतों से काटता है। इसके मनोवैज्ञानिक कारणों में क्रोध या ईर्ष्या की भावना भी होती है।

बड़े बच्चे अपनी चिंताओं और तनावों से मुक्ति पाने के लिए अँगूठा चूसने की भाँति ही दाँतों से नाखून काटते हैं। अपनी नाक को खींचते रहना, होंठ काटना, बालों को लपेटते रहना आदि बातें इस प्रकार की तनावग्रस्तता को दर्शाता है। बच्चे के तनाव के कारण को समझकर सकारात्मक दिशा में प्रयत्न करें। ठीक समय पर उसके नाखून काटने से भी इस आदत से छुटकारा पाया जा सकता है।

प्रबंधन

बच्चे के नाखून बढ़ने पर नियमित रूप से काटते रहें। उन्हें छोटे-छोटे रखें, ताकि उन्हें दाँतों से काटने का अवसर ही न मिले। नाखून को दाँतों से काटने वाले बच्चे को कभी अकेला नहीं छोड़ना चाहिए। बच्चे में क्रोध, ईर्ष्या की भावनाओं के कारण जानने की कोशिश करें और क्रोध वाली स्थिति पैदा न होने दें। ईर्ष्या की भावना सामान्य है लेकिन बच्चों पर समान रूप से ध्यान देने पर ईर्ष्या की भावना को कम किया जा सकता है, इससे नाखून काटने का व्यवहार भी समाप्त हो जाएगा। बच्चे को प्यार से अपने विश्वास में लेकर समझाना चाहिए कि यह आदत गंदी है। उसको उसके उन साथियों या मित्रों का उदाहरण देना चाहिए जो दाँत से नाखून नहीं काटते हैं, बच्चों का साथ पाकर बहुत से बच्चे इस प्रकार की आदत को अपने आप ही छोड़ देते हैं।

3. अत्यधिक क्रोधित होना

एक और सामान्य व्यवहार की समस्या बहुत अधिक क्रोधित होना है। बच्चे अपना क्रोध प्रकट करते हैं, लेकिन जब बच्चा सीमा से ज्यादा क्रोध प्रकट करने लगे तो यह समस्या वाला व्यवहार हो जाता है। कोई भी बच्चा ऐसा तब करता है जब उस पर कम ध्यान दिया जाता है। वह मुख्यतः अपनी तरफ ध्यान आकर्षित करने के लिए अतिक्रोधित होने लगता है। सीमा से अधिक क्रोधित हो जाना समस्या का रूप धारण कर लेता है। बच्चे पर ध्यान न देना या बहुत कम ध्यान देना ही इसका कारण होता है।

प्रबंधन

बच्चे को समझाते हुए उसे कहना चाहिए कि वह यदि इस तरह क्रोध करेगा तो उसकी पसंद की चीज़ें उसे नहीं देंगे, घुमाने नहीं ले जाएँगे या उससे बात नहीं करेंगे। यदि बच्चा फिर भी ऐसा करता है तो कुछ समय के लिए उससे बात नहीं करें। बच्चा जब कुछ समय बाद सामान्य हो जाए जो उसको फिर से प्यार के साथ समझाएँ।

4. ज़िद्दी होना

बच्चे अपनी माँग पूरी करवाने के लिए हमेशा कोशिश करते हैं, वे कभी-कभी ज़िद्द भी करने लगते हैं। बच्चों की आमतौर पर सभी उचित-अनुचित माँगों को पूरा किए जाने पर या अपनी तरफ ध्यान ज़्यादा आकर्षित करने के लिए बच्चे ऐसा व्यवहार अपनाते हैं। बच्चा जानता है कि वह अगर ज़िद्द करेगा तो उसकी हर माँग पूरी कर दी जाएगी (भले ही वह अनुचित ही क्यों न हो)। इसलिए वह बहुत ज़िद्द करता है ज़मीन पर लोटता है, रोता है और हर हाल में अपनी ज़िद पर अड़ा रहता है।

प्रबंधन

ऐसा व्यवहार समस्या न बन जाए इसके लिए बच्चे को उसकी माँग का उचित या अनुचित होना बताते हुए उसके व्यवहार को नियंत्रित करना बेहतर होता है। ज़िद्द करने पर उसे अकेला छोड़ देना चाहिए और बता देना चाहिए कि जब वह ज़िद्द छोड़ेगा तभी उसकी बात सुनी जाएगी। बच्चे को सामान्य अवस्था में आने पर उसको ज़िद्द न करने के लिए समझाएँ और बताएँ कि केवल उचित माँगों को ही पूरा किया जाएगा।

5. झूठ बोलना

बड़े जो आदर्श उदाहरण बच्चों के समक्ष पेश करते हैं, उन्हें देख कर ही बच्चे सीखते हैं। उस समय का स्मरण रखें जब आप उनसे वादा करके निभाते नहीं हैं या फिर घर पर होने पर भी किसी का फ़ोन आने पर कहलवा देते है कि आप उस समय बाहर गए हुए हैं आदि-आदि। बच्चा सदैव झूठ बोलता है या कभी-कभी ही, इस अंतर को समझना महत्वपूर्ण है। असली समस्या झूठ बोलने की नहीं है, बल्कि उसके पीछे के अन्य कारण हैं जिनके लिए झूठ बोला गया है। ऐसे कुछ बच्चों के लिए व्यावहारिक सहायता लेना उपयुक्त होता है। अर्थात् कुछ बच्चे तो बिना किसी विशेष कारण के ही झूठ बोलते हैं। उन्हें झूठ बोलने में आत्मसंतुष्टि मिलती है। भय के कारण भी बच्चा झूठ बोलता है, वह अपनी बात को महत्व देने के लिए भी झूठ बोलता है, साथी बच्चों पर प्रभाव जमाने के लिए भी झूठ बोलता है, अपनी बात को महत्व देने के साथ उसे प्रभावशाली अनोखी और चमत्कारपूर्ण बनाने के लिए उसे रंग देने के लिए बच्चा झूठ बोलता है। बच्चों में नकल करने (अनुकरण) की प्रवृत्ति होती है जिसके कारण बच्चा वही व्यवहार सीखता और करता है जो उसके माता-पिता या बड़े लोग, भाई-बहन और शिक्षक करते हैं। उन्हें झूठ बोलते सुनकर बच्चा भी झूठ बोलने लगता है।

अपने किसी दोष या गलती को छुपाने के लिए भी बच्चे झूठ बोलते हैं। वह झूठ बोलकर अपनी कमी या गलती को एक बार छुपाकर फ़ायदा प्राप्त कर लेता है तो वह फिर झूठ बोलकर अपनी कमी व गलती को बार-बार छुपाता है और झूठ बोलने का आदी हो जाता है। झूठ बोलना आदत का रूप धारण कर लेता है और बच्चा बात-बात पर झूठ बोलने लगता है। कुछ बच्चे अपनी माँ को मोहल्ले की खबर लाकर देते हैं और वे यह जानते हैं कि माँ को किस प्रकार की खबरों से संतुष्टि होती है। वे वैसी ही खबरें और बातें लाकर सुनाते हैं, इस तरह भी उन्हें झूठ बोलने की आदत पड़ जाती है।

प्रबंधन

बच्चों को झूठ बोलने से रोकने के लिए सबसे पहले माता-पिता, परिवार के लोग, शिक्षक गण आदि को बच्चों के सामने झूठ नहीं बोलना चाहिए। उनकी कथनी और करनी में भी अंतर नहीं होना चाहिए। बच्चों को उपदेशात्मक बातें कम से कम कहें और उपदेशों को अपने आचरण में ढालें इसका बच्चों पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। बच्चों की गलतियों, दोषों, कमियों को सुधारा जाए। बच्चों को अपमानित या प्रताड़ित न किया जाए, ऐसी स्थितियाँ पैदा करें कि बच्चे को अपनी कमी, गलती, दोष छुपाने की ज़रूरत ही नहीं पड़े।

बच्चों की कल्पनाएँ रंगीन होती हैं, वह अपनी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना चाहते हैं। बच्चे को अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर दिये जाने चाहिए, ताकि वह अपनी इस इच्छा की पूर्ति कर सके। माता-पिता उन कारणों का अपने स्तर पर पता लगाएँ कि किस कारण से बच्चा झूठ बोल रहा है तथा कारण का पता लगाने पर उस स्थिति को दूर करने की कोशिश करें।

6. छिपकर करना

कभी-कभी कुछ बच्चे खाने-पीने की चीज़ें छिपकर खाते है। छिपकर करने की इस आदत से इतना ही आशय है कि बच्चों में चोरी की प्रवृत्ति पाई जाती है। बिना अधिकार के दूसरों की वस्तुओं को उठा लेना और फिर उन्हें लौटाने की इच्छा न करना चोरी है। यह झूठ बोलने की आदत से बहुत मेल खाती है।

छिपकर चीज़ें लेने के पीछे अनेक कारण हैं, जो निम्नांकित हैं—

1. बच्चा किसी चीज़ को पाकर प्रसन्न होता है। अधिकार की यह सहज प्रवृत्ति जब एक भावना के रूप में विकसित होने लगती है तब वह चोरी करने लगता है, यहाँ तक कि इस भावना के कारण उसे चोरी करने में पश्चाताप या कोई ग्लानि नहीं होती।
2. कई बच्चे गरीबी या अभावों के कारण चोरी करते हैं क्योंकि गरीबी के कारण उनकी कई इच्छाएँ पूरी नहीं हो पातीं।
3. अपने साथियों, भाई-बहनों को परेशान करने के उद्देश्य से भी बच्चे चोरी या हेरा-फेरी करते हैं।
4. कुछ बच्चे दूसरों से बदला लेने के लिए चोरी करते हैं। वास्तव में इससे बच्चे की हिंसक वृत्ति को आनंद की अनुभूति होती है। वह दूसरों को रोता देखकर प्रसन्न होता है। कुछ बच्चे चोरी इसलिए करते हैं कि इससे उनके अहम की संतुष्टि होती है।
5. बच्चे पारिवारिक कारणों से भी चोरी करते हैं। यदि माता-पिता उनके साथ भेदभाव का व्यवहार करते हैं, उन्हें स्नेह से वंचित रखते हैं तो वे अपनी प्रतिशोधी भावनाओं को, क्रोध और खीझ को चोरी करके प्रकट करते हैं।
6. बच्चे अपने संवेगात्मक व्यवहारों (भावात्मक अभिव्यक्ति) को पूरा करने के लिए चोरी करते हैं।
7. बच्चे चोरी न करें इसके लिए आवश्यक है कि माता-पिता इसकी गहराई में जाएँ। बच्चों पर विश्वास प्रकट कर जब उनके मन की स्थिति का यदि मूल्यांकन किया जाए तो यह बात सरलता से समझ में आ जाती है कि वे चोरी क्यों करते हैं। जब बच्चे की सभी प्रकार की आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँगी (इनमें मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ भी शामिल हैं), तो चोरी की आदत या व्यवहार स्वयं ही हतोत्साहित होगा और बच्चा चोरी करना छोड़ देगा। पहली बार चोरी करने पर ही बच्चे को चोरी क्या है समझाते हुए ऐसा न करने के लिए कहा जाना चाहिए ताकि वह व्यवहार शुरू ही में हतोत्साहित हो जाए।

7. बिस्तर गीला करना

यह समस्या कम बच्चों में ही देखने को मिलती है। 2 से 5 वर्ष की आयु के बच्चों में यह समस्या आमतौर पर पाई जाती है। यह माता-पिता द्वारा थोड़ा ध्यान देने पर छूट जाती है। यदि इस आयु के बाद बच्चे में यह आदत के रूप में दिखाई दे तो उसे बाल रोग विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए।

प्रबंधन

साधारणतया रात में सोने के पहले बच्चे को तरल पदार्थ न दें और माँ द्वारा रात में एक-दो बार बच्चे को मूत्र त्याग करने के अभ्यास के साथ ही इस प्रकार की आदत छूट जाती है।

8. बहुत झगड़ालू होना (विध्वंसक होना)

बच्चों हिंसा की भावना, लड़ाई झगड़ा करना आदि सामान्य बात है, परंतु कुछ बच्चों में बहुत ज़्यादा लड़ाई-झगड़ा, मारपीट करने की प्रवृत्ति होती है, एक सीमा के बाद यह समस्यात्मक व्यवहार कहलाता है। बच्चों में अपनी वस्तुओं को दूसरे के द्वारा न छूने देने या मिलजुलकर प्रयोग न करने देने की प्रवृत्ति होती है, अपने भाई-बहनों के साथ भी वे इस व्यवहार को प्रकट करते हैं। इतना ही नहीं वे अपने वातावरण (जिसमें व्यक्ति भी सम्मिलित हैं) पर अपना पूरा नियंत्रण करना चाहते हैं, इसलिए वे अपनी बात मनवाने की पूरी कोशिश करते हैं। यही प्रवृत्ति जब किन्हीं बच्चों में अधिक मात्रा में होती है तो वे मारपीट, तोड़-फोड़ करते हैं और उनका यह व्यवहार विध्वंसात्मक रूप धारण करता चला जाता है। यह परिवार ही नहीं समाज के लिए भी हानिकारक होता है इसलिए शुरू से ही ऐसे व्यवहार पर अंकुश लगाना ज़रूरी है। ऐसे बच्चों में सामाजिकता की भावनाएँ विकसित करनी चाहिए, जिससे बच्चों में मिलजुलकर रहने, एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करने, सहायता करने व सहिष्णुता जैसे गुणों को विकसित करता है।

प्रबंधन

झगड़ालू व विध्वंसात्मक व्यवहार वाले बच्चों को अपने सामने बिठाएँ व उन पर बराबर ध्यान देते रहें। उनको विभिन्न गतिविधियों व कार्यों को करने को कहा जाए तथा उन्हें सामूहिक गतिविधियों में नेतृत्व करने का मौका दिया जाए। ऐसा करने से उनकी झगड़ालू और विध्वंसात्मक प्रवृत्तियाँ नेतृत्व के गुण के रूप में विकसित होने लगेंगी और उनका व्यवहार धीरे-धीरे बदल जाएगा।

बच्चों के व्यक्तित्व में व्यवहार की भूमिका

बच्चा किसी भी राष्ट्र के भविष्य व धरोहर होते हैं। यद्यपि कोई भी बच्चा समस्या लेकर समाज में पैदा नहीं होता, यह तो परिवेश व वातावरण है जो अबोध बच्चे को अवांछित और असामाजिक गतिविधियों में खींच लेता है। असामाजिक कार्य के लिए बच्चे की मनोभावनाएँ, मनःस्थिति तथा वातावरण को समझना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि व्यवहारगत असमानता सामूहिक प्रयास से दूर किया जा सकता है। इस प्रकार बाल्यावस्था ऐसा कालक्रम होता है, जिसमें मनुष्य सभी प्रकार की चिंताओं से स्वतंत्र होता है। यह अवस्था उत्साह, उमंग व सुनहरे सपनों से भरी होती है। इस अवस्था में मनुष्य सामान्यतः ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, भेदभाव आदि दुर्गुणों से मुक्त होता है। बाल्यकाल से ही मनुष्य की विकास यात्रा प्रारंभ होती है। किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति तथा विकास का भविष्य वहाँ के बच्चों के आधारभूत व सर्वांगीण विकास पर निर्भर करता है। इसलिए बच्चों को देश का कर्णाधार कहा जाता है। बच्चों की समुचित देखभाल तथा संपूर्ण विकास पर ही राष्ट्र की प्रगति निर्भर करती है। बच्चों की देखभाल जितनी अच्छी तरह से की जाएगी, देश का भविष्य भी उतना ही उज्जवल होगा।

बच्चों का क्रियाकलाप

बाल्यकाल कल्पनाशील होता है। बाल कल्पना सरल, उर्वर एवं विविध रंगी तो है, किंतु उसका एक विशिष्ट गुण सहज विश्वसनीय होना है। बच्चे की

स्वच्छ, निर्मल कल्पना किसी बात पर सहज विश्वास कर लेती है। असंभव घटनाएँ भी उसे प्रभावित करती हैं, वह अश्लील चित्रों को भी अभिनंदनीय मान बैठता है इसलिए सही-गलत का निर्णय करने का विवेक उनमें नहीं होता और न ही वास्तविकता को पहचानने के लिए उनके पास अनुभव होता है। जिस किसी बात में उनकी कल्पना को प्रेरित एवं स्फुटित करने की अदम्य शक्ति व साहस होता है, वह उसके लिए रुचिकर होता है।

बच्चों में आपराधिक प्रवृत्ति की मन:स्थिति

बाल अपराध को हम इस तरह समझ सकते है कि 'जब बालक समाज के नियमों, परंपराओं, मर्यादाओं आदि का उल्लंघन करता है, अर्थात् समाज विरोधी व्यवहार करता है तो उसके व्यवहार को बाल अपराध कहते हैं। सामान्यत: बच्चे के समाज विरोधी कार्य एवं व्यवहार को ही बाल अपराध कहा जाता है।' प्रत्येक बच्चे के व्यवहार में चंचलता, हठवादिता और शैतानी का समावेश अवश्य होता है, परंतु उसका यह व्यवहार जब निर्धारित मानदंडों को लाँघने लगता है, तब उसे अपराधी की संज्ञा दी जाती है। एस. चन्द्र (1967) के अनुसार "यह शैतानी जब एक आदत के रूप में विकसित हो जाती है, जो समाज द्वारा प्रतिष्ठित व्यवहार प्रतिमान की सीमाओं को पार कर जाती है तो उससे जो व्यवहार उभर कर आता है उसे ही बाल अपराध कहा जाता है।"

बाल अपराधियों को मुख्यत: दो भागों में बाँटा गया है—

1. सामान्य बाल अपराधी—ऐसे बच्चे जो समाज में मारपीट करना, शांति भंग करना, तीव्र गति से वाहन चलाना तथा अन्य वाहनों को टक्कर मारना और यातायात व्यवस्था में असुविधा उत्पन्न करना, अश्लील गाने गाना, झूठ बोलना इत्यादि कार्य को करते हैं, उन्हें सामान्य बाल अपराधी कहा जाता है।
2. गंभीर बाल अपराधी—ऐसे बच्चे जो चोरी, अपहरण, लूटपाट, बलात्कार, हत्या व समाज में अव्यवस्था फैलाना इत्यादि कार्य को करते हैं उन्हें गंभीर बाल अपराधी कहा जाता है। अपराधी बच्चों के व्यक्तित्व को अधिक प्रभावी बनाने में पूर्व में कुछ अध्ययन हुए हैं जिनका विवरण निम्नांकित है।

मनोसामाजिक अध्ययन व परिदृश्य

पेसवक्र (1971) ने अपने अध्ययन में अपराधी तथा सामान्य किशोरों के व्यक्तित्व विषमता में सार्थक अंतर पाया। सिंह (1982) ने जनजाति बाल अपराधी और सामान्य बालकों के बुद्धिलब्धि (आई, क्यू) 3–4 के व्यक्तित्व कारक में भिन्नता पायी। शर्मा, गुन्थे एवं सिंह (1982) ने बाल अपराधी एवं सामान्य बच्चों के व्यक्तित्व सहवर्तिता का अध्ययन किया, जिसमें बाल अपराधी सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक कुंठित, आश्रित, हठधर्मी, कम बुद्धि तथा अधिक आक्रामक व्यवहार वाले पाये गये, जबकि सुषमा (1990) ने बाल अपराधी तथा बालिका अपराधी के व्यक्तित्व कारक में कोई अंतर नहीं पाया। सिंह एवं उपाध्याय (2007) ने अपराधी एवं गैर अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन किया, जिसमें अधिकतर अपराधी कम बुद्धिमान, सांवेगिक अस्थिरता, अविश्वासी,

नवीनता से दूर, अधिक तनावपूर्ण प्रकृति वाले पाये गये।

परामर्शदाता की भूमिका

शिक्षा प्रक्रिया में बच्चा एक महत्वपूर्ण कारक है। बच्चों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु व उसके जीवन लक्ष्यों के निर्धारण मार्ग में सुधारगृह के शिक्षकों तथा परिवारजनों द्वारा उनके वांछनीय व्यवहार को प्रोत्साहित करना होगा, जो उनके व्यक्तित्व का निर्माण करने में सहयोगी हों। बच्चों के जीवन में असफलता, असंतोष, कुंठा आदि को परामर्शदाता के सहयोग से दूर करने का प्रयास किया जाए। बाल सुधारगृह में बच्चे अत्यंत विषम परिस्थितियों से लाए जाते हैं एवं विषम परिस्थितियों को झेलने को मज़बूर होते हैं। वहाँ के कर्मचारियों को चाहिए कि वे बच्चों के साथ सहयोगात्मक एवं सहानुभूतिपूर्ण ढंग से पेश आएँ तथा बच्चों की भावनाओं को समझने का प्रयास करें। इससे बच्चों में भावात्मक व स्वच्छ व्यक्तित्व का विकास होगा। बाल अपराधियों की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए और अधिक शोध किये जाने चाहिए, ताकि बाल आपराधियों की समस्याओं का अधिक से अधिक निदान हो सके।

उपर्युक्त सुझावों के अतिरिक्त समाज में इन बाल अपराधियों के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण को जागृत करना आवश्यक है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक संस्थाएँ समय-समय पर बाल सुधार गृहों में जाकर इन बच्चों के साथ अंत: क्रिया करके उनमें आत्मविश्वास का संचार कर सकती हैं तथा बच्चों को यह अनुभव कराने में सफल हो सकती हैं कि वे इस समाज का एक अभिन्न अंग हैं। मनोवैज्ञानिक एवं परामर्शदाता के सहयोग से बाल अपराधियों के व्यक्तित्व विकास में एक महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकता है, जिससे बाल अपराधियों के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास किया जा सके।

सामाजिक दायित्व

आर्थिक उदारीकरण के पश्चात् माता-पिता व अभिभावक अपने बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए गुणात्मक एवं पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं, जिसके फलस्वरूप वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बच्चे, सामाजिक समरसता में तालमेल बैठाने में स्वयं को असहज महसूस करते हैं। फलतः समाज में आपराधिक प्रवृत्ति वाले बच्चों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इसके फलस्वरूप बच्चों का मनोसामाजिक विकास भी प्रभावित होता है। इस प्रकार इस विकट परिस्थिति में बदलाव लाने के लिए प्रत्येक माता-पिता तथा अभिभावकों को अपने व्यस्त जीवन में से बच्चों के लिए मूल्यवान समय व पूर्ण सहयोग उपलब्ध कराना चाहिए तथा अपने कर्तव्यों व दायित्वों का पालन ईमानदारीपूर्वक करना चाहिए। अतः बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बच्चों की सोच व उनकी भावनाओं को सहृदय समझना चाहिए। साथ ही साथ बच्चों की मन:स्थिति के संदर्भ में योजनाबद्ध व सकारात्मक दिशा में चिंतन-मनन करने से समाज में सौहार्द्रपूर्ण परिवेश पैदा किया जा सकता है जिससे बच्चे समावेशित व सतत विकास की ओर अग्रसर हो सकें। इस प्रकार बच्चा एक सबल व सक्षम राष्ट्र के निर्माण में मील का पत्थर साबित होगा, ऐसी आशाएँ हैं।

बच्चों का व्यवहार प्रबंधन

ढाई साल की उम्र से ही बच्चा अपने आसपास के परिवेश को समझना शुरू कर देता है। दैनिक जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में दूसरों के अनुकरण के द्वारा व्यवहार करना सीखता है। सीखने की इस प्रक्रिया में बच्चे के अच्छे व्यवहार को बढ़ावा देना चाहिए। यह वह अवस्था है जब बच्चा समाज में अपनी पहचान बना रहा होता है। अच्छे व्यवहार को प्रोत्साहित किए जाने से उसके सकारात्मक व्यक्तित्व को निर्माण की संभावनाएँ विकसित होती हैं। बच्चों को छोटे-छोटे निर्णय लेने में सहभागी बनाते हुए उनके निर्णय को महत्त्व देना चाहिए। बच्चों के ज़िद्दी व्यवहार को कठोरता से दबाने के बजाय इसे व्यवहार के कारणों की समझ बनाकर निराकरण करना चाहिए।

बच्चों को इस आयु से ही ज़िम्मेदारियाँ देकर उनके व्यवहार का प्रबंधन किया जाना चाहिए, इससे स्वयं अनुशासन विकसित होता है। शाला पूर्व शिक्षा केंद्रों पर आने वाले बच्चों में कुछ बच्चे ऐसे हो सकते हैं जिनका व्यवहार सामान्य से अलग हो। हो सकता है कुछ बच्चे आक्रामक स्वभाव के हों तो कुछ बच्चे बहुत अधिक संकोची या शर्मीले हों। इन बच्चों के व्यवहार के पीछे असली कारणों को पहचान कर उन कारणों को दूर किया जाने का प्रयास किया जाना चाहिए तथा इस बात का ध्यान भी रखा जाना चाहिए कि इससे दूसरे बच्चे आतंकित या भयभीत न हों।

व्यवहार और आदत की समस्याओं का माता-पिता को केवल प्रबंधन करना ही अपेक्षित है। वह एक मनोवैज्ञानिक या विशेषज्ञ का कार्य करे, यह उम्मीद उनसे की जाती है, माता-पिता को ऐसे बच्चों को प्रबंधन करना आना चाहिए। वे परिस्थितियाँ या स्थितियाँ जिनके कारण बच्चा अभाव महसूस करता है या परिवार में मौजूद स्थितियाँ जिनके कारण मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पा रही हों, उन्हें जानकर उनको हटाने की सलाह व सुझाव देनी चाहिए। जैसा वातावरण बच्चों के लिए तैयार किया जाता है वैसा ही उद्दीपनपूर्ण वातावरण भी घर में बच्चों को मिले इसके लिए माता-पिता, बड़े व भाई-बहन आदि को समझाकर या परामर्श देकर उचित परिस्थितियों का निर्माण किया जा सकता है।

संदर्भ

ओलिवर, एम. 1995. *अन्डरस्टेंडिंग डिसएबिलिटी — फ़्राम थ्योरी टू प्रेक्टिस*. बेसिंगस्टोक, मेकमिलन प्रेस.

ओरमार्ड जे.ई. 1998. *एजुकेशनल साइकोलोजी — डेवलपिंग लर्नर*. द्वितीय संस्करण. ओहियो. न्यू जर्सी.

इंटरनेशनल बाक्केलारेट ऑरगेनाईजेशन 2007. *प्राइमरी ईयर्स प्रोग्राम. मेकिंग द पी.वाई.पी. हैप्पन–अ करिकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर इंटरनेशनल प्राइमरी एजुकेशन*, पीटरसन हाउस, यूनाइटेड किंगडम. mtpyph.weebly.com/upload/9/0/6/9/9069240/mtpyph-doc.pdf पर देखा गया।

इराम-ब्लैचफ़ोर्ड एड. 1998. *ए करिकुलम डेवलपमेंट हैंडबुक फ़ॉर अर्ली चाईल्डहुड एजुकेटर्स*. ट्रेन्थम पब्लिकेशन, यूनाइटेड किंगडम.

एन.ए.ई.वाई.सी. 1995. *डेवलपमेंटली एप्रोप्रिएट प्रेक्टिस इन अर्ली चाईल्डहुड प्रोग्राम सर्विंग चिल्ड्रन फ्राम बर्थ थ्रू* 1–8 www.naeyc.org/sites/default/files/globally-shared/downloads/PDFs/resources/position-statement/PSDAP.pdf. पर देखा गया।

——.1995. स्कूल रेडीनेस — ए पोज़िशन स्टेटमेंट ऑफ़ द एन.ए.ई.वाई.सी. www.naeyc.org/sites/default/files/globally-shared/downloads/PDFs/resources/position-statement/readiness.pdf. पर देखा गया।

एन.सी.ई.आर.टी. 2006. *नेशनल फ़ोकस ग्रुप* पर आधारित आधार पत्र 'अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन'. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* — 2005. एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली.

एन.सी.टी.ई. 2009. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फ़ॉर टीचर एजुकेशन — टुवर्ड्स प्रिपेयरिंग प्रोफ़ेशनल एंड ह्यूमन टीचर — नेशनल काउंसिल फ़ॉर टीचर एजुकेशन*. एन.सी.टी.ई . नयी दिल्ली.

एरीज, फ़िलिप. 1962. *सेंचुरीज ऑफ़ चाइल्डहुड*. विन्टेज बुक्स, न्यूयॉर्क.

कौल, वीनिता. 1996. *प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम*, एन.सी.ई.आर.टी. नयी दिल्ली.

——. 2010. *अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन प्रोग्राम*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

प्रपन्न, के. 2005. 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 – एक विमर्श'. *योजना*. नयी दिल्ली.

बर्क, लउरा ई. 2003. *चाइल्ड डेवलेपमेंट*. पियरसन एजुकेशन. नयी दिल्ली.

——. 2007. डेवलपमेंट *थ्रू द लाइफ़स्पैन*. पियरसन एजुकेशन. दिल्ली.

भटनागर, आर. 2005. *लिटिल स्टेप्स*. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

भारत सरकार. 2007. *नेशनल नॉलिज कमीशन रिपोर्ट — 2007*. भारत सरकार. नयी दिल्ली.

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 2012. *शाला शिक्षा पाठ्यक्रम रूपरेखा*. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

रंगनाथन, एन. 2000. *दी प्राइमरी स्कूल चाइल्ड — डेवलपमेंट एंड एजुकेशन*. ओरियंट लौगमैन. नयी दिल्ली.

रूबेलो ब्रिटो. पी. और एम.सी. लिमिलगन. 2012. *स्कूल रेडीनेस एंड ट्रांजिशंस*, यूनिसेफ़, न्यूयॉर्क.

वुलफ़्लौक, अनीता. 2004. *एजुकेशनल साइकोलॉजी*. पियरसन प्रिंटिंस हाल. दिल्ली.

संट्रोक, जॉन, डब्ल्यू. 2008. *ए टोपिकल अप्रोच टू लाइफ़-स्पान डेवलपमेंट*. (तीसरा संस्करण). टाटा मैग्राहिल. नयी दिल्ली.

सी.ई.सी.ई.डी. 2013. *इंडियन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन इंपेक्ट (आई.ई.सी.ई.आई.) स्टडी*. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली.

स्वामीनाथन, एम. और पी. डेनियल 2004. *प्ले एक्टीविटीज़ फ़ॉर चाईल्ड डेवलपमेंट — ए गाईड टू प्रीस्कूल टीचर्स*. नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली.

स्वामीनाथन, एम. 1987. *बच्चों के लिए खेल-क्रियाएँ*. यूनिसेफ़, नयी दिल्ली.

हॉल्ट, जॉन. 1972. *इस्केप फ़्रोम चाइल्डहुड*. एकलव्य प्रकाशन. भोपाल.